सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़ारिआ

खटखटाने वाली

पूरा सफ़र — वो दिन जब तराज़ू रखी जाएगी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 101 • 11 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल-क़ारि'अह
1. खटखटाने वाली!

यौम यकूनुन्-नासु कल्-फ़राशिल्-मब्सूस
4. जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों जैसे होंगे।

व तकूनुल्-जिबालु कल्-'इह्निल्-मन्फ़ूश
5. और पहाड़ धुनी हुई ऊन जैसे होंगे।

फ़-अम्मा मन सक़ुलत मवाज़ीनुह
6. तो जिसके पलड़े भारी होंगे।

फ़-हुव फ़ी 'ईशतिर्-राज़ियह
7. वो पसंदीदा ज़िंदगी में होगा।

व अम्मा मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुह
8. और जिसके पलड़े हल्के होंगे।

एक नाम जो दस्तक देता है

बेटा, यह सूरह अपना नाम एक ऐसे लफ़्ज़ से लेती है जो एक आवाज़ का बयान है: 'अल-क़ारि'अह।'

मादा 'क़र्अ' का मतलब है मारना, खटखटाना, किसी चीज़ पर टकराना। 'क़ारि'अह' वो ज़र्ब है जो इतनी ज़ोर से लगे कि सुनाई दे — दरवाज़े पर हथौड़ा, एक ऐसा धचका जो आपको सीधा खड़ा कर दे। यह क़ियामत के नामों में से एक है: खटखटाने वाली आफ़त, वो वाक़िआ जो एक ही वक़्त में पूरी मख़्लूक़ के दिलों पर दस्तक देगा।

और देखिए सूरह का आग़ाज़ किस अंदाज़ में होता है: 'अल-क़ारि'अह। मल्-क़ारि'अह। व मा अद्राक मल्-क़ारि'अह?' — खटखटाने वाली! खटखटाने वाली क्या है? और आपको क्या मालूम कि खटखटाने वाली क्या है?

बेटा, तीन छोटे धचके, और हर अगला पहले से भारी। लफ़्ज़ बोला जाता है, फिर

सवाल बनता है, फिर आपकी रसाई से बाहर क़रार दिया जाता है। यह उस चीज़ की अरबी है जो सादे जुमले में आ ही नहीं सकती।

और फिर, उसकी तारीफ़ करने के बजाय, अल्लाह उससे बेहतर काम करते हैं: वो उसे आपको दो ऐसे मनाज़िर में दिखा देते हैं जो आप कभी नहीं भूलेंगे।

परवाने और धुनी हुई ऊन

'यौम यकूनुन्-नासु कल्-फ़राशिल्-मब्सूस — जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों जैसे होंगे।'

बेटा, कभी रात को लैंप के गिर्द परवाने देखे हैं? छोटे, नाज़ुक, हैरान — एक ही वक़्त में हर सिम्त उड़ते हुए, एक दूसरे से टकराते हुए, कहीं नहीं पहुँचते हुए, बे-बस हो कर उसी रोशनी की तरफ़ खिंचते हुए जो उन्हें जला देगी।

उस दिन अल्लाह इंसानियत को यूँ बयान करते हैं। मुनज़्ज़म सफ़ों में चलते हुए नहीं — बिखरे हुए। 'मब्सूस' का मतलब है छितराया हुआ, फैला दिया गया। वो सारे निज़ाम जो हमने बनाए — मुल्क, दर्जे, ओहदे, ख़ानदान, क़तारें, सीढ़ियाँ — सब घुल कर एक परेशान, नाज़ुक झुंड बन जाएँगे।

बेटा, सोचिए हमारी ज़िंदगी का कितना हिस्सा यह कोशिश करने में गुज़रता है कि हम आम न लगें: विज़िटिंग कार्ड पर लिखा ओहदा, घर का साइज़, महफ़िलों में मिलने वाली इज़्ज़त। और उस दिन हम में से हर एक उस झुंड का एक परवाना है।

'व तकूनुल्-जिबालु कल्-'इह्निल्-मन्फ़ूश — और पहाड़ धुनी हुई ऊन जैसे होंगे।'

''इह्न मन्फ़ूश', बेटा, वो ऊन है जिसे धुन कर फैलाया गया हो — हल्की, फूलती हुई, तैरती हुई, इतनी बे-वज़न कि एक फूँक से हिल जाए। और अल्लाह यह तशबीह पहाड़ों को दे रहे हैं: सबसे भारी चीज़ें जो हम जानते हैं, ज़मीन के लंगर, मुस्तक़िल होने की ख़ुद तारीफ़ — उड़ती हुई रुई बन गए।

तो दोनों मंज़र मिला कर, बेटा: कायनात की सबसे मज़बूत चीज़ बे-वज़न हो जाती है, और सबसे मुतकब्बिर मख़लूक़ एक बिखरा हुआ परवाना। जिन चीज़ों से हम अपने

आपको नापते हैं, उन सबका वज़न उस दिन ख़त्म हो जाएगा।

और ठीक इसी लिए अगली आयतें वज़न के बारे में हैं।

भारी पलड़े, हल्के पलड़े

'फ़-अम्मा मन सक़ुलत मवाज़ीनुह — तो जिसके पलड़े भारी होंगे — फ़-हुव फ़ी 'ईशतिर्-राज़ियह — वो पसंदीदा ज़िंदगी में होगा।'

बेटा, तरकीब देखिए "ईशतिन राज़ियह' — एक ऐसी ज़िंदगी जो ख़ुद राज़ी है, मुतमइन है, ख़ुश है। सिर्फ़ वो ज़िंदगी नहीं जिससे वो राज़ी है, बल्कि वो ज़िंदगी जो अपनी फ़ितरत में ही पसंदीदा है। उसकी हर चीज़ उसके मुवाफ़िक़ है।

'व अम्मा मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुह — और जिसके पलड़े हल्के होंगे — फ़-उम्मुहू हाविय — उसकी माँ हाविया है।'

बेटा, यह तरकीब चौंका देती है: 'उसकी माँ एक गहरी खाई है'। अरब 'उम्म' — माँ — का लफ़्ज़ पनाह और लौट कर आने की जगह के लिए इस्तेमाल करते थे, क्योंकि बच्चा जब दुनिया से डर जाए तो अपनी माँ की तरफ़ भागता है। तो अल्लाह फ़रमा रहे हैं: बड़े ख़ौफ़ के दिन, जब हर कोई किसी पनाह की तरफ़ भागेगा, इस आदमी की पनाह — उसकी 'माँ' — हाविया होगी: एक बे-तह गड्ढा, हमेशा गिरते रहने की जगह।

'व मा अद्राक मा हियह — और आपको क्या मालूम कि वो क्या है? नारुन हामियह — एक सख़्त गरम आग।'

बेटा, सूरह वहीं ख़त्म हो जाती है। दो लफ़्ज़। इतने सवालों और मंज़रों के बाद, आख़िरी जवाब मुख़्तसर है और दरवाज़ा बंद कर देता है।

अमल को वज़न क्या देता है

बेटा, ग़ौर कीजिए कि अल्लाह यह नहीं कहते 'जिसके अमल ज़्यादा हों' — वो कहते हैं जिसके पलड़े भारी हों। तादाद और वज़न एक चीज़ नहीं है।

एक शख़्स अमल का पहाड़ ले कर आ सकता है जिसका कोई वज़न न हो, और दूसरा चंद अमल लाए और पलड़ा झुक जाए। तो अमल को वज़न क्या देता है?

पहला — इख़्लास। वो अमल जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो, ठोस होता है; वो अमल जो नाज़रीन के लिए हो, खोखला होता है। बेटा, एक जैसा सदक़ा, एक जैसी नमाज़, दो आदमी अदा करते हैं — एक का वज़न होता है, दूसरे का नहीं।

दूसरा — सुन्नत की पैरवी। वो अमल जो उस तरह ढाला गया हो जैसे नबी ﷺ ने सिखाया, न कि उस तरह जैसे हम पसंद करते हैं।

तीसरा — अमल के वक़्त दिल की हालत। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि बंदे की नमाज़ ख़त्म होती है और उसके लिए उसका दसवाँ हिस्सा लिखा जाता है, इस हिसाब से कि उसका दिल कितना हाज़िर था। बेटा, दो आदमी एक ही सफ़ में एक ही नमाज़ पढ़ते हैं, और उनकी तराज़ू में अलग अलग वज़न दर्ज होता है।

और नबी ﷺ ने हमें ख़ास चीज़ें बताईं जो भारी हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया कि 'अल्हम्दुलिल्लाह' तराज़ू को भर देता है। आप ﷺ ने फ़रमाया कि दो कलिमे ज़ुबान पर हल्के हैं मगर तराज़ू में भारी हैं, और रहमान को महबूब हैं: 'सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिह, सुब्हानल्लाहिल-'अज़ीम।' और आप ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मोमिन की तराज़ू में हुस्न-ए-अख़लाक़ से भारी कोई चीज़ नहीं।

बेटा, इस फ़ेहरिस्त को दोबारा देखिए। एक कलिमा जो चलते चलते कहा जाए। शुक्र का एक लम्हा। लोगों के साथ नर्मी। यही भारी चीज़ें हैं — एक ग़रीब के लिए भी मौजूद, एक बीमार के लिए भी, एक बे-रोज़गार के लिए भी, हर किसी के लिए।

और वो मशहूर हदीस भी है पर्ची वाली: उस दिन एक शख़्स लाया जाएगा जिसके गुनाहों के निन्यानवे दफ़्तर होंगे, हर एक नज़र की हद तक फैला हुआ। फिर एक छोटी सी पर्ची निकाली जाएगी जिस पर 'ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह' लिखा होगा — और वो उन सब पर भारी पड़ जाएगी। क्योंकि अल्लाह की तराज़ू में इख़्लास का वो वज़न है जिसका मुक़ाबला तादाद नहीं कर सकती।

तो बेटा, अल-क़ारिआ का सबक़ यह है: वो दिन आ रहा है जब पहाड़ों का वज़न ख़त्म

हो जाएगा और लोगों के ओहदे मिट जाएँगे, और जिस चीज़ में कोई वज़न बचा होगा वो सिर्फ़ वही होगी जो आपने उस तराज़ू में रखी। इसे ज़िक्र से भरिए, इख़्लास से, हुस्न-ए-अख़लाक़ से — और यह याद रखिए कि जिन चीज़ों का वज़न सबसे ज़्यादा होता है, उनकी क़ीमत अक्सर सबसे कम होती है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. उस दिन सबसे मुतकब्बिर मख़लूक़ एक बिखरा परवाना है, और सबसे भारी पहाड़ उड़ती हुई ऊन — जिन चीज़ों से हम ख़ुद को नापते हैं, उन सबका वज़न ख़त्म हो जाएगा।

2. अमल का वज़न अहम है, तादाद नहीं।

3. इख़्लास अमल को ठोस बनाता है: एक ही काम दो लोगों का बिल्कुल अलग वज़न रख सकता है।

4. नमाज़ में दिल की हाज़री उसके वज़न का हिस्सा है — चार ग़ाफ़िल नमाज़ों से एक नमाज़ ठीक से पढ़िए।

5. तराज़ू उस चीज़ से भरिए जो ज़ुबान पर हल्की है: 'सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिह' और 'अल्हम्दुलिल्लाह'।

6. मोमिन की तराज़ू में हुस्न-ए-अख़लाक़ से भारी कुछ नहीं — आपके अख़लाक़ एक सरमाया-कारी हैं।

7. उस दिन हर कोई किसी पनाह की तरफ़ भागेगा; देख लीजिए कि आपकी पनाह उसकी रहमत हो, कोई खाई नहीं।

या अल्लाह, अल-क़ारिआ के दिन हमारी तराज़ू को इख़्लास, ज़िक्र और हुस्न-ए-अख़लाक़ से भारी कर दीजिए। आमीन।